Nai Dunia (Indore), 15th February 2023, Page – 02

कागज का उत्पादन कम करने के लिए बनाया डिजिटल रसीद देने वाला एप

आइआइटी को मिला वर्ल्ड गवर्नमेंट समिट में सम्मान

गजेन्द्र विश्वकर्मा • इंदौर

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) इंदौर के दो विद्यार्थियों ने दुबई में वर्ल्ड गवर्नमेंट समिट (डब्ल्यूजीएस)-2023 में स्वर्ण पदक और दस लाख यूएई दिरहम का पुरस्कार जीता है। नियति तोताला और नील कल्पेशकुमार पारिख को मिस्र के राष्ट्रपति एबेल फत्ताह अल-सिसी ने पदक से सम्मानित किया। विद्यार्थियों ने 'ब्लाकबिल' एप बनाया है।

ब्लाकबिल, ब्लाकचेन आधारित एप है, जो उपयोगकर्ताओं के लेनदेन के लिए डिजिटल रसीदें तैयार करता है। इसके अतिरिक्त एप कई और समस्याओं का समाधान करता है। इससे रसीदें छापने के लिए उपयोग होने वाले रसायनों से बने ऐसे कागज के इस्तेमाल को रोकना शामिल है, जिन्हें रिसाइकिल नहीं किया जा सकता। वर्ल्ड गवर्नमेंट समिट के तहत संयुक्त अरब अमीरात की सरकार की ओर से हर वर्ष दिए जाने वाले ग्लोबल बेस्ट एम-जीओवी अवार्ड के रूप में विद्यार्थियों ने अवार्ड प्राप्त किया। अवार्ड का उद्देश्य विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं, सरकारी एजेंसियों, संस्थाओं, निजी क्षेत्र की कंपनियों और स्टार्टअप को प्रोत्साहित करना है, ताकि वे स्थानीय और वैश्विक चुनौतियों से निपटने और मानवता के बेहतर भविष्य के लिए नए अवसरों की तलाश के मकसद से नवीनतम प्रौद्योगिकी का उपयोग करके समस्याओं के नए समाधान तलाश सकें।

आइआइटी इंदौर के विद्यार्थी नियति तोताला और नील कल्पेशकुमार पारिख मिस्र के राष्ट्रपति एबेल फत्ताह अल-सिसी से पदक प्राप्त करते हुए। • सौ. संस्थान

स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है थर्मल पेपर

स्वर्ण विजेता नियति तोताला और नील कल्पेशकुमार पारिख ने कहा कि ब्लाकबिल एक ब्लाकचेन आधारित रसीद जनरेशन एप है, जो उपयोगकर्ताओं को उनके सभी लेनदेन के लिए डिजिटल रसीदें प्रदान करता है। ऐसी कई समस्याएं हैं, जिन्हें एप हल कर रहा है और यह स्थायी समाधान करता है। एप से प्रिंटिंग रसीदों में उपयोग होने वाले थर्मल पेपर के उत्पादन को कम किया जा सकेगा। थर्मल कागजों को सामान्य तरीके से रिसाइकल या डिस्पोज नहीं किया जा सकता है। यह स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक होते हैं। एप डाटा पारदर्शिता और सुरक्षा भी प्रदान करता है, क्योंकि यह ब्लाकचेन का उपयोग करता है। रसीदें एक बार बन जाने के बाद बदली नहीं जा सकतीं। एक बार डिजिटल हो जाने के बाद रसीदों को व्यवस्थित करना और उन्हें छांटना न केवल विक्रेताओं के लिए बल्कि उन ग्राहकों के लिए भी आसान हो जाता है, जो व्यक्तिगत वित्त का प्रबंधन करना चाहते हैं। विद्यार्थियों ने बताया कि आइआइटी इंदौर के सिविल व कंप्यूटर विज्ञान इंजीनियरिंग के भूमिल गोहेल नाम के एक अन्य छात्र और उनके प्रोफेसर डा. गौरीनाथ बांदा भी विजेता टीम का हिस्सा हैं, लेकिन समारोह में शामिल नहीं हो पाए।